17-18

Shri. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ★ ESTD. 1999

21 वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श

संपादक

डॉ. एस. वाय. होनगेकर, डॉ. आरिफ़ मक़बूल

सह संपादक : विश्वनाथ सुतार

Shri Vighnaharta Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ESTD. 1999

ने समय समय पर अपने दायित्व का निर्वाह किया है। बल्कि क्षेत्रीय एवं भाषिक भेदभाव को खत्म करने हेतु सामूहिक नेतृत्व की आवश्यकता है।

संदर्भ :

1. भारत गांधी के बाद : रामचंद्र गुहा; अनुवाद ; सुशांत झा; पेंगुइन बुक्स इंडिया ; यात्रा बुक्स;हिंदी का प्रथम संस्करण 2012 पृ.225
2. भारतीय राजनीति पर एक दृष्टि ; किशन पटनायक: राजकमल प्रकाशन ; पहला संस्करण 2006 ; पहली आवृत्ति पृ.137
3. अण्णा भाऊ साठे यांचे पोवाडे व लावण्या; अण्णा भाऊ साठे;लोकवाङ्मयग्रह; अकरावी आवृत्ती नोव्हेंबर 2015 पृ. 23, 24
4. इंडिया सिन्स इंडिपेंडन्स : बिपिनचंद्र ; मराठी अनुवाद ; संपादन–संस्करण के सागर पृ.151
5. वही पृ.142
6. भारत नेहरू के बाद ; रामचंद्र गुहा; अनुवाद ; सुशांत झा; पेंगुइन बुक्स इंडिया ;यात्रा बुक्स; हिंदी का प्रथम संस्करण 2012 पृ.303
7. तद्भव , वर्ष 2, अंक 2, पूर्णांक 29; अप्रैल 2014 , संपादक – अखिलेश पृ.1
8. उडानें ही होंगे अभिव्यक्ति के खतरे ; पुणे आकाशवाणी का कार्यक्रम ; डॉ. विजयकुमारजी का व्याख्यान
9. संसद से सडक तक ; धूमिल ; राजकमल पेपरबुक्स ;प्रथम संस्करण 2013; पहली आवृत्ति 2014; पृ.94
10. कभी के बाद अभी; विनोदकुमार शुक्ल; राजकमल प्रकाशन ; पहला संस्करण; पृ. 39–40

सतीशकुमार पडोळकर

सहायक प्राध्यापक (हिंदी)

राजे रामराव महाविद्यालय,

जत

मो. 9860809492

ई–मेल – spadolkar99@gmail.com

विविध

1

केदारनाथ सिंह की कविता में–चित्रण

केदारनाथ सिंह साठोत्तरी हिंदी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनका आरम्भ से ही प्रकृति के साथ गहरा नाता रहा है। प्रकृति के सजीव बिम्बों को उनके काव्य में देखा जा सकता है। केदारनाथ सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल प्रदेश के 'चकिया' नामक छोटे से गांव में हुआ जहाँ प्रकृति का अनुपम सौंदर्य भरा पडा है। वे प्राकृतिक इस हरे–भरे वातावरण में पले बडे। अर्थात बचपन से ही उन्हें प्राकृतिक सुंदर परिवेश मिला जो उन्हें अपनी कविता लिखने के लिए प्रेरित करता रहा। गांव के इस प्राकृतिक परिवेश के कारण केदारनाथ सिंह की कविताओं में प्रकृति के सुंदर चित्र यहाँ–वहाँ झांकते दिखाई देते हैं। उनकी कविताओं में ग्राम–जीवन से जुडी प्रकृति, लोक–संस्कृति में ढली प्रकृति, मानव और प्रकृति के सहज सम्बन्ध की अभिव्यक्ति हुई है। प्रकृति के माध्यम से केदारनाथ सिंह ने अपने युगबोध को सामने रखा। प्रकृति के नए–नए चित्र उनकी कविताओं में देखने मिलते हैं। एक ओर ग्रामीण समाज की विसंगतियाँ, दूसरी ओर सामाजिक दायित्व साथ ही प्रकृति का मुक्त सौंदर्य उनकी कविताओं की प्रमुख विशेषता है। प्रकृति उनकी कविताओं में मूल्य–बोध बनकर आती है। जमीन, आसमान, मौसम, पानी, बारिश, पेड, चिडिया, जानवर, पशु–पक्षी, वनस्पति आदि का उन्होंने अपनी कविताओं में खुलकर चित्रांकन किया है।

केदारनाथ सिंह उन कवियों में रहे जिन्होंने प्रकृति का ठेट इस प्रकार चित्रण किया जिसका पाठक साक्षात दर्शन–सा आनंद लेने लगता है। उन्होंने प्रकृति का चित्रण एक चित्रकार की तरह किया है। उनकी कविता में प्रकृति मनुष्य के जीवन के साथ प्रस्तुत हुई है। उन्होंने प्रकृति का नाता मात्र सौंदर्य से नहीं जोडा बल्कि प्रकृति का नाता मानव से जोडा है। एक कविता में वे कहते हैं –

'बरसों बाद
आज ...ना में नहाया

Shri. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ESTD. 1999

देर तक
खूब डूबा–उतरा
एक पक्षी की तरह
घूंट–घूंट जल पिया
आत्मा ने देर तक
गहरे अथाह जल से बातें की।"
(अकाल में सारस– पृ.38)

प्रकृति के साथ सहज रिश्ता स्थापित करना यह केदारनाथ सिंह के कविता की प्रमुख विशेषता रही है। बरसों बाद शहर से लौटे कवि जब गंगा में नहाते हैं तब उन्हें देर तक आत्मा ने गहरे अथाह जल से बातें करने का अनुभव होता है। अपनी जडों को वे अपनी मिट्टी से जोडते हैं। मनुष्य का नाता प्रकृति से ऐसा है कि वह उसके बिना रह नहीं सकता प्रकृति का यही लगाव कवि को अपनी कविता लिखने के लिए प्रेरित करता रहा। एक कविता में वे कहते हैं –

"वह पतझड की एक शाम थी
मैं चला जा रहा था अकेला
कि अचानक दृष्टि पडी
काँटों से लदा वह खडा है उदास
सडक के किनारे
बबूल है........... मैने काँटों से पहचाना
और उसे देखकर ऐसा कुछ हुआ
कि रख दिया प्रस्ताव
चलो, कॅनौट प्लेस चले।"
('इंडिया टूडे' (वार्शिक)– पृ.132)

यहाँ कवि की सहज प्रकृति–चित्रण की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। काटों से लदे हुए उदास बबूल का चित्रण कर कवि उसके साथ गांव के उदास किसान का रिश्ता जोडते हैं। केदारनाथ सिंह का यह मानना रहा कि मानव प्रकृति से जितना अधिक निकट होता है वह अन्दर–बाहर से उतना ही अधिक समृद्ध होता चला जाता है। प्रकृति मनुष्य को भावनात्मक स्तर पर समृद्ध बनाती रहती है। प्रकृति और मानाव एक–दूसरे पर निर्भर हैं, प्रकृति बचेगी तो मानव बचेगा। केदारनाथ सिंह की अनेक कविताओं में प्रकृति को बचाने की बात की गई है –

"यह पृथ्वी
यदि और कहीं नहीं तो मेरी हड्डियों में
यह रहेगी जैसे पेड के तने में
रहते हैं। दीमक
जैसे दाने में रह जाते हैं घन।"

(यहाँ से देखो – पृ. 25)

केदारनाथ सिंह का नाता जमीन से रहा है। वे अपनी गांव की मिट्टी को संपूर्ण अस्तित्व के साथ अपने में समाहित कर लेना चाहते हैं। यहाँ प्रकृति और कवि के बीच का रिश्ता कायम होता है। उन्होंने प्रकृति का सजीव एवं सचेत रूप चित्रित किया है जो मानव को प्रेरणा देता है। फूलों पौधों के माध्यम से वे मनुष्य के मन में एक नए स्वप्न को भरते रहे –

"ओस भरे
कंपते गुलाब की टहनी पर
तितली के पंखों सी सही हुई
धूप।
एक नाम है छोटा–सा
मेरे बेस्वाद खुले होटों पर
तेरे लिए।
और भी होंगे
पर जाने क्यों मेरा मन
तुझे देखकर सम्मुख
कन्धों तक उठे हुए पौधों के बीच में
सहसा पुकार उठा
एक इसी नाम से।"
(जमीन पक रही है – पृ. 56)

केदारनाथ सिंह की कविताओं में न जाने कितने प्राकृतिक दृष्यों की कितनी अनमोल छबियाँ दिखाई देतीं हैं। उनकी कविता ग्रामीण जीवन के साथ जुडे प्राकृतिक सौंदर्य को अधिक मात्रा में अभिव्यक्त करती हैं। कईक कविताओं में प्रकृति का किसानी रूप में चित्रण हुआ है। ग्रामीण परिवेश में खेतों की हरियाली कवि को प्रभावित करती है। गांव, किसान और खेतों पर लिखी हुई कई कविताएं केदारनाथ सिंह के यथार्थपरक प्रकृति–चित्रण की बेजोड मिसाल है –

"इससे पहले कि आटा गूंधा जाय
इससे पहले कि तवा गर्म हो
इससे पहले कि लकडहारे जंगल से लौटें
शाम हो जाती है।"
(जमीन पक रही है – पृ. 28)

केदारनाथ सिंह की सामाजिक चेतना प्रखर है। किसानों की मेहनतकशों की समस्याओं को उन्होंने ईमानदारी से अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। प्रकृति उन्हें इस काम में मदत करती रही। उनके प्रकृति चित्रण में ग्रामीण प्रकृति का सौंदर्य है। फसल से भरे खेत हैं. पगडंडी के दोनों ओर उगी घांसे है माँची

Shri Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ESTD. 1990

देर तक
खूब डूबा–उतरा या
एक पक्षी की तरह
घूंट–घूंट जल पेया
आत्मा ने देर तक
गहरे अधाट जल से बातें की।''
(अकाल में सारस– पृ.38)

प्रकृति के साथ सहज रिश्ता स्थापित करना यह केदारनाथ सिंह के कविता की प्रमुख विशेषता रही है। बरसों बाद शहर से लौटे कवि जब गंगा में नहाते हैं तब उन्हें देर तक आत्मा ने गहरे अथाह जल से बातें करने का अनुभव होता है। अपनी जडों को वे अपनी मिट्टी से जोडते हैं। मनुष्य का नाता प्रकृति से ऐसा है कि वह उसके बिना रह नहीं सकता प्रकृति का यही लगाव कवि को अपनी कविता लिखने के लिए प्रेरित करता रहा। एक कविता में वे कहते हैं –

''वह पतझड की एक शाम थी
मैं चला जा रहा था अकेला
कि अचानक दृष्टि पडी
काँटों से लदा वह खडा है उदास
सडक के किनारे
बबूल है............ मैंने काँटों से पहचाना
और उसे देखकर ऐसा कुछ हुआ
कि रख दिया प्रस्ताव
चलो, कॅनौट प्लेस चले।''
('इंडिया टूडे' (वार्शिक)– पृ.132)

यहाँ कवि की सहज प्रकृति–चित्रण की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। काटों से लदे हुए उदास बबूल का चित्रण कर कवि उसके साथ गांव के उदास किसान का रिश्ता जोडते हैं। केदारनाथ सिंह का यह मानना रहा कि मानव प्रकृति से जितना अधिक निकट होता है वह अन्दर–बाहर से उतना ही अधिक समृद्ध होता चला जाता है। प्रकृति मनुष्य को भावनात्मक स्तर पर समृद्ध बनाती रहती है। प्रकृति और मानाव एक–दूसरे पर निर्भर हैं, प्रकृति बचेगी तो मानव बचेगा। केदारनाथ सिंह की अनेक कविताओं में प्रकृति को बचाने की बात की गई है –

''यह पृथ्वी
यदि और कहीं नहीं तो मेरी हड्डियों में
यह रहेगी जैसे पेड के तने में
रहते हैं। दीमक
जैसे दाने में रह लेते हैं घुन।''

(यहाँ से देखो – पृ. 26)

केदारनाथ सिंह का नाता जमीन से रहा है। वे अपनी गांव की मिट्टी को संपूर्ण अस्तित्व के साथ अपने में समाहित कर लेना चाहते हैं। यहाँ प्रकृति और कवि के बीच का रिश्ता कायम होता है। उन्होंने प्रकृति का सजीव एवं सचेत रूप चित्रित किया है जो मानव को प्रेरणा देता है। फूलों पौधों के माध्यम से वे मनुष्य के मन में एक नए स्वप्न को भरते रहे –

''ओस भरे
कंपते गुलाब की टहनी पर
तितली के पंखों सी सही हुई
धूप।
एक नाम है छोटा–सा
मेरे बेस्वाद खुले होटों पर
तेरे लिए।
और भी होंगे
पर जाने क्यों मेरा मन
तुझे देखकर सम्मुख
कन्धों तक उठे हुए पौधों के बीच में
सहसा पुकार उठा
एक इसी नाम से।''
(जमीन पक रही है – पृ. 56)

केदारनाथ सिंह की कविताओं में न जाने कितने प्राकृतिक दृष्यों की कितनी अनमोल छवियाँ दिखाई देतीं हैं। उनकी कविता ग्रामीण जीवन के साथ जुडे प्राकृतिक सौंदर्य को अधिक मात्रा में अभिव्यक्त करती हैं। कईक कविताओं में प्रकृति का किसानी रूप में चित्रण हुआ है। ग्रामीण परिवेश में खेतों की हरियाली कवि को प्रभावित करती है। गांव, किसान और खेतों पर लिखी हुई कई कविताएं केदारनाथ सिंह के यथार्थपरक प्रकृति–चित्रण की बेजोड मिसाल है –

''इससे पहले कि आटा गूंधा जाय
इससे पहले कि तवा गर्म हो
इससे पहले कि लकडहारे जंगल से लौटें
शाम हो जाती है।''
(जमीन पक रही है – पृ. 28)

केदारनाथ सिंह की सामाजिक चेतना प्रखर है। किसानों की मेहनतकशों की समस्याओं को उन्होंने ईमानदारी से अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। प्रकृति उन्हें इस कार्य में मदत करती रही। उनके प्रकृति चित्रण में ग्रामीण प्रकृति का सौन्दर्य है।

College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ... Vijaysinha Yadav

का मूल है, गांव की सुंदर नदी है, आंगन में तुलसी के पौधे हैं, और इन सब के बीच किसान अपने सुख–दुःख, आशा–निराशा, हर्ष–विषाद के साथ जुडा हुआ है। यही केदारनाथ सिंह के कविता की विशेषता है कि सुंदर प्रकृति के बीच ग्रामीण–जीवन धीरे–धीरे चित्रित होने लगता है। ग्रामीण प्रकृति का चित्रण वे इस प्रकार करते हैं –

"क्यों न ऐसा हो कि आज शाम
हम अपने थैले और डोलचियाँ
रख दे एक तरफ
और सीधे धान की मंजरियों तक चलें........
जहाँ चावल
दाना होने से पहले
सुगन्ध की पीडा से छटपटा रहा हो।"
(अकाल में सारस – पृ. 13)

संवेदनशील कवि ही पीडा की इस छटपटाहट को समझ सकता है। गांव की समस्याएं, किसानों का जीवन, खेतों की स्थिति, आदि के साथ ही वे प्रकृति से रू–ब–रू होते हैं। एक चित्रकार की तरह वे ग्रामीण परिवेष का चित्रण करते हैं। इसी कारण उनकी कविताओं में प्रकृति भी ग्रामीण जीवन की समस्याओं के साथ अभिव्यक्त होती है। उन्होंने प्रकृति को कल्पना के आधार पर चित्रित नहीं किया बल्कि ग्रामीण–प्रकृति को अत्यंत यथार्थ जामा पहनाया –

"यह दोपहर का समय था
और शब्द पौधों की जडों में सो रहे थे
खुशबू यही से आ रही थी – मैंने कहा
यहीं–यहीं शब्द यहीं हो सकता है
जडों में
पकते हुए दाने के भीतर
शब्द के होने की पूरी सम्भावना थी"
(जमीन पक रही है – पृ. 13)

कविता का ग्रामीण परिवेष में पनपना ही कविता के जीवित रहने की निशानी है। शब्दों का पौधों के जडों में होना यह कवि की मूल संवेदना है। केदारनाथ सिंह ने ग्रामीण–जीवन की समस्याओं को प्रकृति के साथ जोडा है। किसान पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर होता है इसी कारण केदारनाथ सिंह ने प्रकृति का नाता सीधे किसानों के साथ जोडा है। प्रकृति पर उनकी गहरी आस्था है, बिना आस्था के प्रकृति का ऐसा सूक्ष्म चित्रण करना असम्भव है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है केदारनाथ सिंह की कविता का परिवेष गांव है, इसी कारण उनकी कविता में ग्राम–जीवन व प्रकृति की झांकी को

इत्र–तित्र देखा जा सकता है। ग्रामीण परिवेष को उन्होंने मानों अपनी कविता में पिरोया है। उपर से सहज और सीधा दिखनेवाला उनका प्रकृति–चित्रण मानव जीवन से जुडा है। उनकी कविता अर्थ के विभिन्न आयाम लिए मानव जीवन से अपना रिश्ता स्थापित करती है। प्रकृति का सौंदर्य केदारनाथ सिंह को प्रभावित करता है, उन्हें प्रेरणा देता है और वह उसपर अपनी कविता लिखने के लिए उल्हासित हो जाते हैं। ग्राम–प्रकृति का वास्तविक रूप उनकी कविताओं में झांकता है। कभी प्रकृति को प्रतीक के रूप में तो कभी प्रकृति को बिम्बात्मक रूप में प्रस्तुत कर वे निरंतर प्रकृति से अपना रिश्ता कायम रखते हैं। उन्हें बार–बार यह लगता रहा कि प्रकृति की ओर लौटना यह मनुष्य की जरूरत है। प्रकृति के विभिन्न आयामों को उन्होंने अपनी कविता में अभिव्यक्त किया है। उनके प्रकृति चित्रण में विविधता देखी जा सकती है। केदारनाथ सिंह की कविता में चित्रित प्रकृति–चित्रण मात्र सौंदर्य का अनुभव नहीं कराता बल्कि पाठक को जीवन के प्रति आस्था उत्पन्न कराता है। वे प्रकृति के कुशल चितेरे कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति के विविध रूप चित्रित हुए हैं। प्रकृति को वे मानवीय संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविता में प्रकृति हर बार नया रूप–रंग लेकर प्रस्तुत होती है। स्वयं केदारनाथ सिंह का यह मानना रहा कि प्रकृति के अभाव में जीवन की कल्पना सम्भव नहीं है। उनकी कविता में अभिव्यक्त प्रकृति को जीवन से अलग करके देखा नहीं जा सकता। यही वह कारण है कि समकालीन कवियों में प्रकृति–चित्रण की दृष्टि से केदारनाथ सिंह अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखते हैं।

डॉ. नाजिम शेख
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
श्री. विजयसिंह यादव कला
व विज्ञान महाविद्यालय,
पेठ–वडगाव, जि. कोल्हापुर
मो. नं. 09960851877

2017-2018
Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur
ESTD. 1909

ROLE OF LIBRARIES IN CHANGING INFORMATION AND COMMUNICATION TECHNOLOGY (ICT) SCENARIO

Editor :

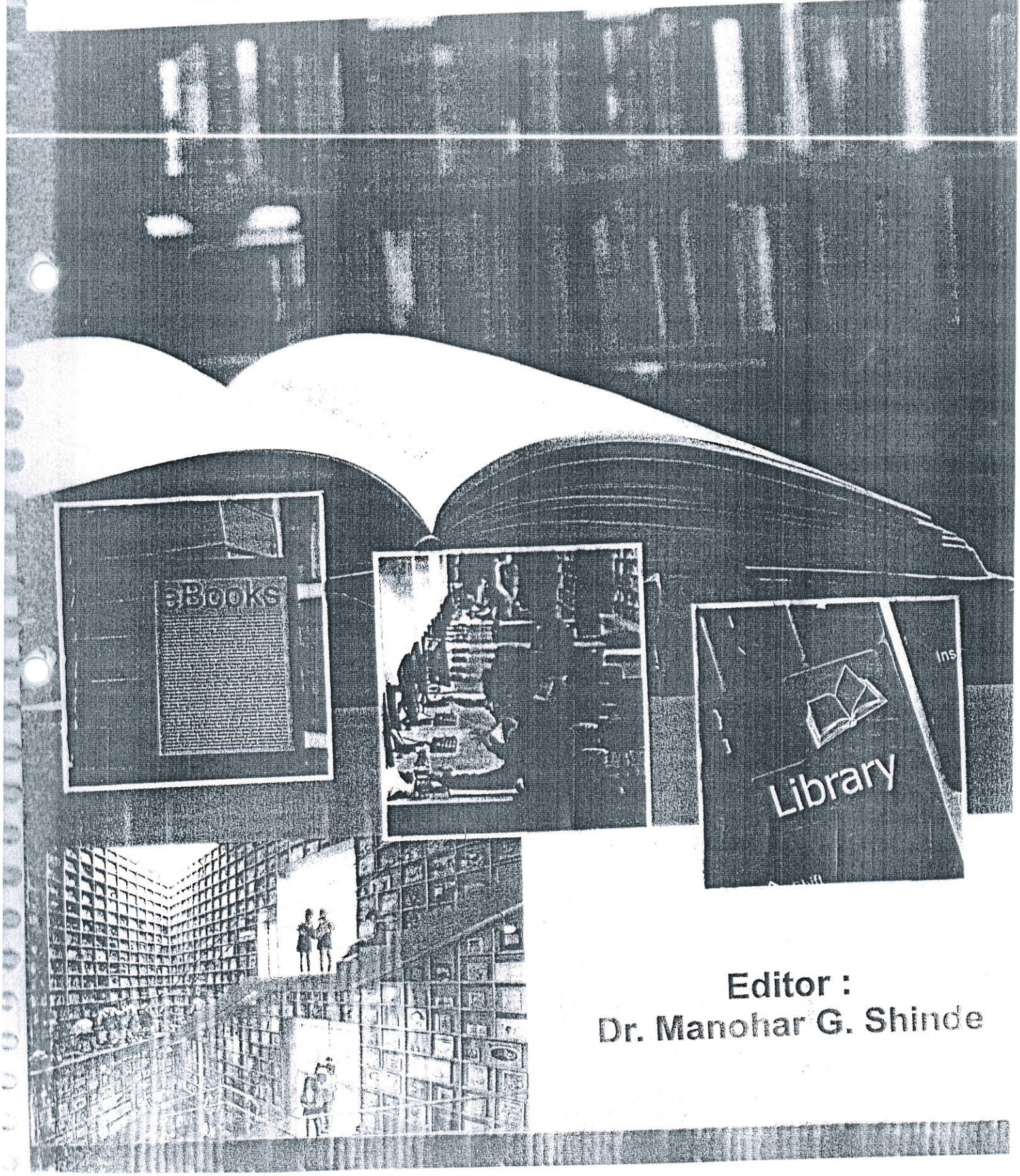

Dr. Manohar G. Shinde

Smt. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ESTD. 1969

National Conference on Role of Libraries in Changing Information and Communication Technology (ICT) Scenario
Editor :Dr. Manohar G.Shinde

ISBN NO.978-81-933230-8-3

Publisher :

Dr.Mrs. S. B. Shahapure
Principal,
Yashwantrao Chavan Warana Mahavidyalatya, Warananagar.
Tal-Panhala Dist-Kolhapur (Maharashtra)Pin- 416113

© Author, all rights reserved.

Print : February 2018.

Type setter & printers :
Shreekant Computers & Publishers,
University Road , Rajarampuri,
Kolhapur.

Disclaimer : The views expressed in Research papers published in this book by the authors are their own and the publisher and editor do not accept any legal responsibility regarding plagiarism or inaccuracy for the views of authors.

Prize: ₹ *350/-*

Shri. Vilasrao Yadav College Peth Vadgaon Dist. Kolhapur ESTD. 1999

THEME – 5 ICT Application in Libraries

Sr. No.	Title of paper	Author	Page No.
39	ICT Based Library Services	Mrs.Bamane Dhanawanti S.	193
40	Role of Libraries and the ICT Scenario in Education	Dr. SatputeDinesh D.	197
41	JOOMLA: An Open Source Content Management System	Mr. Ajagekar R. H	200
42	ICT Application in Libraries	Dr.Lad Ashok Tukaram	206
43	ICT Skills For Academic Librarians	Mr.Kurade Sandeep	210
44	ICT Applicaton In Libraries	Mr.Mandrupkar Ravi S	213
45	Availability of ICT Facilities at the Universities: A Case Study	Dr. Bilawar Prakash Bhairu	220
46	Expectations of Users from Health Science College Libraries in Kolhapur District in ICT Era	Mr. Chavan Raghunath R	225
47	Application of Information Technology in Libraries: An Overview	Mr.Savekar, Rajendra S.	231
48	Modern Trends and Electronic Information Dissemination Centres.	Dr.Smt. Mudekar T. B. Dr. Jadhav Sandip B.	239
49	Use Modern ICT Based Digital Right Management Technology for Digital Library	Dr. Pati Vilas S. Dr.Patil Manisha V. .	245
50	Impact of recent ICT applications on college libraries for providing innovative services.	Dr. Mrs. Savita Shrikant Badkatte	253
51	Application of ICT Technologies in the Libraries	Mrs. Patil Shilpa A.	256
52	ICT Application in Libraries	Mrs.Subhedar Vaishali S.	261
53	ICT assisted Teaching methods in Chemistry	Dr.Mrs.Prabha R.Salokhe	265

Shri. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur

EXPECTATIONS OF USERS FROM HEALTH SCIENCE COLLEGE LIBRARIES IN KOLHAPUR DISTRICT IN ICT ERA

Mr. Raghunath Ramchandra Chavan
Librarian,
Shri. VijayshinshYadav College PethVadgaon
Dist. Kolhapur,

Abstract

The present research paper is confined to study the users of Ayurvedic Medical College libraries in Western Maharashtra viz Doctors, Teachers, and medical students as the users of the library. The efforts are made to study their users from the view point of their satisfaction about their requirements from the library.

Key words: *User, User Study, Medical Libraries, Western Maharashtra.*

Introduction

In the library there are important factors responsible for working of the library i.e. user, library collection and librarian. Librarian is the mediator and playing an important role and bringing users and its reading material together. Librarians develop the collection as per the desired goal of organization / institution, whereas user requirement (needs) to be given proper attention while fulfilling the goal of the institution.

General, in the context of the library the term 'Reader' is called as "Who reads the book is reader", whereas the users defined as "Who makes the use of large verify of documents of the library." In this context the term 'Users' is fully employed to represent the seekers of information. Users are continuously imparting the information as per requirement.

Therefore, it needed to understand he users of the library systematically. For the purpose of the study the term users and reader taken in the context of use of library and the meaning of both are the same.

Concept of User

The term 'User' in the context of information chain may be at the end. The generator of information, who comes in the beginning of the chain, may also be an 'End User' of information. In the context of database, he is the 'Searcher', a user may be a 'Researcher' he may be a middle man or liaison officer in the dissemination of information. Thus, the term 'User' is complex, varied and unclear.

The user is also called as patron, client members of the library, customers and the readers. All these terms are called synonymous terms for the users. The user is one of these who makes use of information.

The information is used by the user for specific purpose and one has to see the effects happened to the often use of information. If the excepted effects are then the users are happy, satisfactory with the information provided to them.

Definition of User

The definition of information user is as under given by the information security Glossary.

ISSN - 2394-2266

धर्माबाद शिक्षण संस्था, धर्माबाद द्वारा संचलित

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय

धर्माबाद, जि. नांदेड (महा.)

(नॅक पुनर्मूल्यांकन 2.87 CGPA के साथ 'B' मानांकन)

तथा

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के संयुक्त तत्त्वावधान में

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं
महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २५ वाँ (रजत महोत्सवी) अधिवेशन

सार्थक उपलब्धि

२१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध

२२-२३ दिसंबर, २०१७

संपादक
डॉ. मधुकर खराटे

अतिथि संपादक
डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार

अनुक्रमणिका

Shri. Vitthalrao Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ★ ESTD. 1989

अ.क्र.	शीर्षक	संशोधक	पृ.क्र.
1)	समकालीन हिंदी ग़ज़लों में महानगरीय परिदृश्य	डॉ. मधुकर खराटे	1
2)	अरुण कमल की कविता में चित्रित महानगरीय सामाजिक यथार्थ	डॉ. प्रिया ए.	5
3)	21 वीं सदी के काव्य में महानगरीय मानवीय संवेदना	डॉ.वी. पार्वती	8
4)	21 वीं सदी के हिंदी ग़ज़लों में व्यक्त महानगरीय बोध	प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी	11
5)	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता	डॉ. कांचनमाला बाहेती	14
6)	21 वीं शताब्दी के हिन्दी काव्य साहित्य में महानगरीय बोध स्त्री-चिन्तन के संदर्भ में	डॉ. पवन कुमार	17
7)	विराट के काव्य में महानगरीय बोध	प्रा. डॉ. कामिनी तिवारी	22
8)	डॉ. दामोदर खडसे जी के काव्य में महानगरीय बोध	डॉ. संजयकुमार नं. शर्मा	26
9)	इक्कीसवी सदी की हिंदी कविता में महानगरीय बोध	डॉ. सहदेव वर्षाराणी	29
10)	इक्कीसवी सदी की कविताओं में व्यक्त महानगरीय बोध	डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे	32
11)	हिंदी काव्य में महानगरीय बोध	डॉ. अशोक तुकाराम जाधव	37
12)	21 वीं सदी की कविता में महानगरीय जीवन की अभिव्यक्ति	प्रा.डॉ. दिग्विजय टेंगसे	39
13)	डॉ. कुँअर बेचैन की गजलों में चित्रित महानगरीय बोध	प्रा.डॉ.अविनाश कासांडे	44
14)	इक्कीसवीं सदी की कविता और महानगरीय जीवन	डॉ. सुरडकर दिनकर तुकाराम	46
15)	इक्कीसवी शताब्दी के हिंदी कविता साहित्य में महानगरीय बोध	प्रा.डॉ.बळीराम भुक्तरे पाटील प्रशांत प्रकाशराव	48
16)	समकालीन गज़लों में अभिव्यक्त महानगरीय बोध	डॉ. सुनील बी .कुलकर्णी डॉ. प्रीति सोनी	51
17)	महानगरीय बोध और 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता	डॉ.पाटील प्रणिता लक्ष्मणराव	53
18)	प्रभा खेतान के काव्य में चित्रित महानगरीय जीवन	प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	55
19)	राजेश जोशी की कविता में महानगरीय बोध (विशेष काव्यसंग्रह - 'चाँद की वर्तनी')	प्रा. एम.एम. शिवशेट्टे	63
20)	समकालीन हिन्दी कविताओं में चित्रित महानगरीय बोध (चयनित कविताओं के विशेष संदर्भ में)	शेख हीना अन्वर	66
21)	हिंदी कथा-साहित्य में 'महानगरीय' प्रवृत्तियों का क्रमिक विकास	डॉ. राहुल मिश्र	69
22)	महानगरीय कथा साहित्य में स्त्री	डॉ. विजयकुमार राऊत	72
23)	गोविंद मिश्र के कथा-साहित्य में वर्णित महानगरीय बोध	प्रा. विजय एकनाथ सोनजे	74
24)	21 वीं सदी के उपन्यास एवं कहानी साहित्य में महानगरीय बोध	स्मिता कल्याणराव चालिकवार	77
25)	21वी शताब्दी के कथासाहित्य में महानगरीय बोध	इम्रानखान मुन्नसबखान	78
26)	'वे दिन' में चित्रित महानगरीय जीवन	डॉ. काकानि श्रीकृष्ण	79
27)	नासिरा शर्मा के उपन्यास में शहरीकरण	डॉ. बी. प्रवीणाबाई टी. गोदावरी	82
28)	21 वीं सदी का हिंदी उपन्यास लेखन और महानगरीय बोध	डॉ. संदीप रणभिरकर	84
29)	महानगरीय बोध और हिंदी उपन्यास	प्रा.डॉ. अनिता नेरे (भामरे)	89
30)	'काँच घर' में महानगरीय जीवन	डॉ. अनिल साळुंखे	91
31)	'अन्तर्वंशी' उपन्यास में चित्रित महानगरीय दाम्पत्य जीवन का बदलता परिवेश	डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव	93
32)	महानगरीय जीवन का यथार्थबोध : एक जमीन अपनी	डॉ. राजेंद्र रोटे, डॉ. कल्पना गंगातीकर	95

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में महानगरीय बोध

- डॉ.सहदेव वर्षाराणी पिराजीराव
श्री. विजयसिंह यादव महाविद्यालय,
पेठ वडगांव, ता.हातकणंगले, जि.कोल्हापूर ४१६११२

Shri Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ESTD.

२१ वीं सदी की हिन्दी कविता में महानगरीय बोध की प्रस्तुती अपनी समग्रता में हो रही है। अपने चारों ओर जो भी घटनाएँ कवि देख रहा है, उन्हीं को बडी शिद्दत के साथ उठाकर कविता लिखी जा रही है। और यहा होना बेहद जरुरी है क्योंकि आज हम देखते हैं २१ वीं सदी में नए प्रश्न हमारे सामने हैं। भूमंडलीकरण के प्रभाव और बाजारवाद में मनुष्य केवल उपभोक्ता बन चुका है। ऐसे में कवि जो कुछ देख रहा है उसी को अपनी कविता में वाणी दे रहा है। इस सदी की कविता में महानगरीय बोध उभरकर सामने आता है। महानगर के कारण भारतवासी का चरित्र बदलता जा रहा है। मनुष्यता के रक्त से उसने अपनी दूकाने सजाई है। इस भागमभाग की दुनिया में काम और अर्थ के सिवा बाकी सब व्यर्थ है। ममता, समता, संवेदना इनके लिए सब झूठ है। इस गलाकाट प्रतियोगिता में 'सबकुछ मेरा' यह भाव बढता जा रहा है। ऐसे महानगर में जानेवाले भोले भाले गॉव के लोगों की अवस्था क्या होती है। इस भाव को एकांत श्रीवास्तवजी इस तरह व्यक्त करते है-

"गॉव के किसान शहर के मिलें और फैक्ट्रियों में मजूर हुए गॉव की बहु-बेटियॉ । शहर जाकर चौका-बर्तन करनेवाली नौकरानियॉ हुई

"गॉव के नौजवान पढ लिखकर न किसान बन सके न कर्मचारी इस अधकचरी संस्कृति में फंसकर फुलती हुई उनकी सॉस जमीन, जाति-धरम के झगडे हुए थानों, और कोर्ट कचहरियों में खो गया गॉव-घर का सुकून।''[१]

आज हम देखते हैं टैक्नोलॉजी के विकास ने एक ओर संपूर्ण समाज को संचार माध्यम और मनोरंजन-कंपनियों की दुनिया में बदल दिया है, तो दूसरी तरफ आम आदमी के सामने रोजी-रोटी, कपडा-मकान की समस्या आज भी प्राथमिक है। शोषन, दमन और अत्याचार के उदाहरण चारों तरफ है। गुजरात से लेकर इराक तक की घटनाएँ इसी २१ वीं सदी की शुरुआत है। ऐसे समय में हिन्दी कविता इस परिवेश से कैसे अछूती रह पाती? २१ वीं सदी में मनुष्य ने बहुत विकास कर लिया किंतु कुछ कमियॉ भी रहीं। हम पर्यावरण को नहीं बचा पा रहे इसलिए कविने प्रदूषण के प्रति सावधान किया है। इस सदी में कुछ प्रकोप भी हुए। पानी के प्रकोप में 'सुनामी' हो या २६ जुलै २००६ की धुऑधार बारीश हो। कविने इसे अपनी कविता का विषय बनाया। सांप्रदायिक दंगे, स्त्री-भ्रुण हत्याएँ, आतंकवाद, प्रदुषण, किसानों की जिंदगी का कटुसच, मृत्यु से डर की जिंदगी, देश की आर्थिक स्थिति, नैतिक पतन आदि समग्र परिवेश २१ वीं सदी की हिन्दी कविता के मूल में है। प्रस्तुत आलेख में इसी महानगर की जिंदगी को खोजने की कोशिश की गई है।

२१ सदी में भारतीय समुदाय की धर्मनिरपेक्षता की परंपरा पर महानगर की जिंदगी में लगातार हमले हो रहे हैं। सांप्रदायिकता समाप्त होनी चाहिए थी, जो बढती चली गई। धर्मांधता और जातिवादी मानसिकता ने देश में विव्देष का माहौल खडा किया। 'विविधता में एकता' यह नारा देनेवाले देश में स्थितियॉ कुछ ऐसी है-

"खून और माटी के कीचड में धंस गया शहर
मनुष्य होने के मतलब जर्जर किले सा ढह गया
तालाब में लाशें
कुए में लाशें
इस बीच कोई पूछ बैठता है
ठीक-ठाक बताइएगा
ज्यादा कौन मरा- हिदुं या मुसलमान?''[२]

२१ वीं सदी के कवि की महानगर की जिंदगी की चिंताएँ बढती जा रही है। सारी की सारी राजनीतिक पार्टियों की विश्वसनीयता समाप्त हो रही है। इस सदी के कवि की एक छोटीसी कविता देखिए, जिसमें कवि नीलाभ सिर्फ मनमोहनसिंह ही नहीं, बुश और उनकी दोगली नीतियों का विरोध करते है -

"साधो, मनमोहन की सत्ता,
खेले अपना पत्ता
छटनी करे मजूरों की और खुद लेती है भत्ता
अम्बानी घर लक्ष्मी नाचे कृषक मर अलबत्ता
सेठ विदेशी देसी राजा लूटें लत्ता-लत्ता
कहते कवि नीलाभ बदल दो ऐसी जुल्मी सत्ता ।''[३]

 ISSN : 2394-2266

धर्माबाद शिक्षण संस्था, धर्माबाद संचालित

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, धर्माबाद, जि. नांदेड (महा.)

नॅक पूनर्मूल्यांकन 2.87 CGPA के साथ 'B' श्रेणी प्राप्त

(संलग्न : स्वा. रा. ती. म. विश्वविद्यालय, नांदेड) तथा

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के संयुक्त तत्वावधान में

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

"२१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध"

एवं महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २५ वाँ (रजत महोत्सवी) अधिवेशन

दि. २२ तथा २३ दिसंबर २०१७

"प्रमाणपत्र"

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / सुश्री./ प्रा./ डॉ. सदेव वर्षाराणी निवृत्तीराव

श्री. विजयसिंह यादव महाविद्यालय, पेठ वडगांव ता. हातकणंगले जि. कोल्हापूर

को लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, धर्माबाद जि. नांदेड तथा महाराष्ट्र हिंदी परिषद के सुयंक्त तत्वावधान में दिनांक २२ - २३ दिसंबर, २०१७ को '२१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध ' इस विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं महाराष्ट्र हिंदी परिषद के २५ वें (रजत महोत्सवी) अधिवेशन में बीज-वक्ता/प्रमुख अतिथि/सत्राध्यक्ष/विषय-प्रवर्तक/आलेख-प्रस्तोता/ प्रतिभागी के रुप में सम्मिलित होने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र सहर्ष प्रदान किया जाता है!

सत्र/शोध-आलेख का शीर्षक "इक्कीसवी सदी की हिंदी कविता में महानगरीय बोध"

डॉ. गजानन चव्हाण प्रधान सचिव, महाराष्ट्र हिंदी परिषद	डॉ. मधुकर खराटे अध्यक्ष, महाराष्ट्र हिंदी परिषद	डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार संयोजक, राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी एवं म.हिं. प. का २५ वाँ (रजत म.) अधिवेशन	for P+B प्राचार्य डॉ. डी. आर. मोरे कार्याध्यक्ष राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी एवं म.हिं. प. का २५ वाँ (रजत म.) अधिवेशन

।। न हि ज्ञानेन् सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।।

सांगरुल शिक्षण संस्था, सांगरुल संचलित

स. ब. खाडे महाविद्यालय, कोपार्डे

ता. करवीर, जि. कोल्हापुर (महा.)

THE PORTRAYAL OF SUBALTERNS IN INDIAN LITERATURE

ISBN : 978-81-927211-9-6

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दि. २० फरवरी २०१८

हिन्दी कथा साहित्य में उपेक्षित समाज

हिन्दी कविता में उपेक्षित समाज

(नारी, दलित, किसान, मजदूर, अनाथ बालक के संदर्भ में)

प्राचार्य, डॉ. डी.डी. कुरलपकर

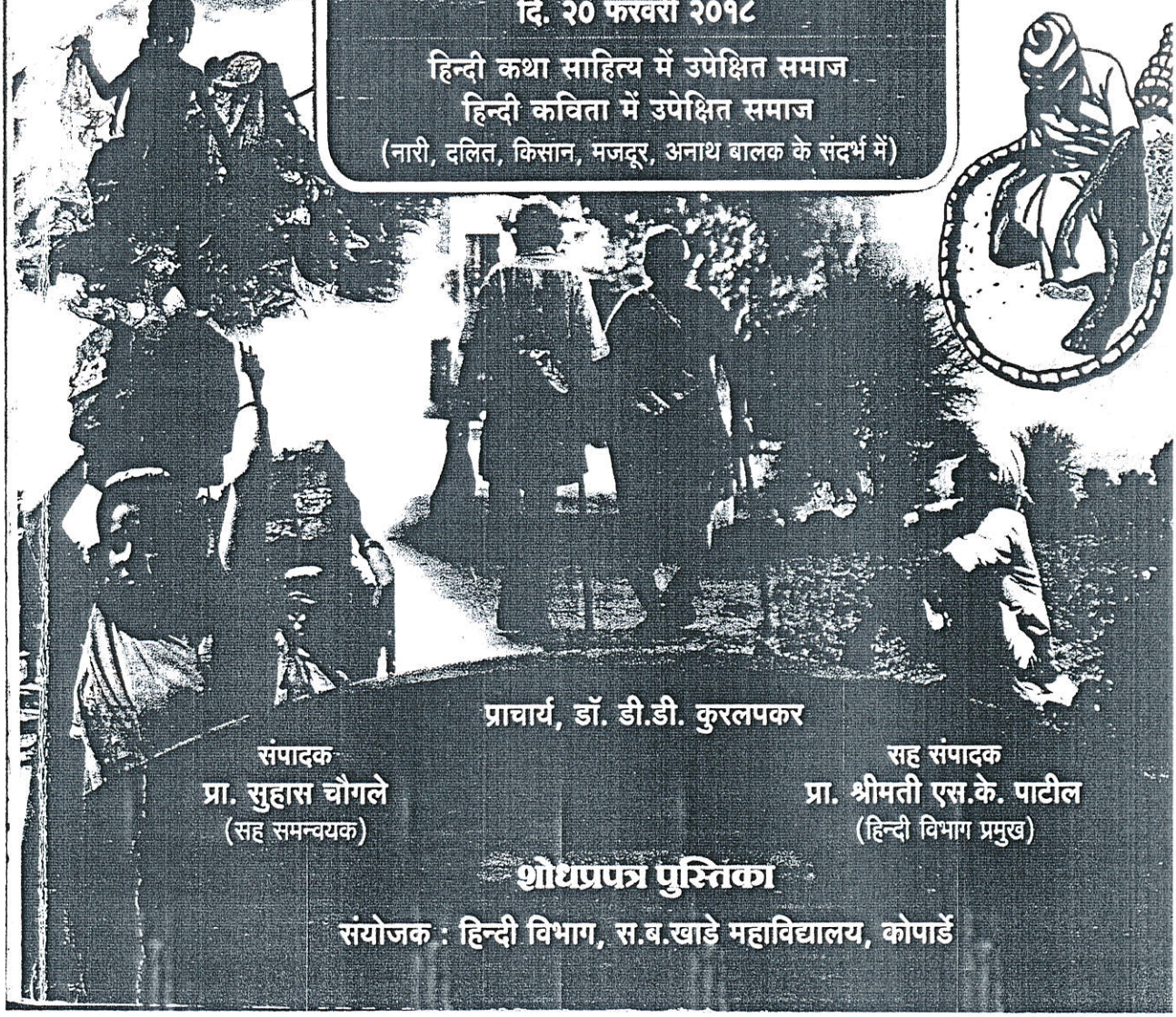

संपादक
प्रा. सुहास चौगले
(सह समन्वयक)

सह संपादक
प्रा. श्रीमती एस.के. पाटील
(हिन्दी विभाग प्रमुख)

शोधप्रपत्र पुस्तिका

संयोजक : हिन्दी विभाग, स.ब.खाडे महाविद्यालय, कोपार्डे

©Editor

Sangrul Shikshan Sanstha, Sangrul's
S.B. KHADE MAHAVIDYALAYA, KOPARDE
TAL. KARVEER, DIST. KOLHAPUR 416 204.

ISBN: 978-81-927211-9-6

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval systems without permission in writing from the copyright owners.

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

Publisher:

PraRup Publications
Kolhapur. (Maharashtra)
Pin – 416 008

Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Ichalkaranji, Dist. 19

अ.न.	प्रपत्र का नाम	पपत्र लेखक	पृष्ठ क्र.
25	मन्नू भंडारी के 'मैं हार गई' कहानी संग्रह में चित्रित नारी जीवन	प्रा.भागवत भगवान देवकाते	123
26	मालती जोशी की प्रतिनिधि कहानियों में नारी चित्रण	प्रा.श्रावण आबा कांबले	128
27	'गूंगाँ नहीं था मैं 'कहानी संग्रह आर्थिक समस्या से जझता दलित वर्ग	प्रा.सचिन मधुकर कांबले	133
28	'मुक्तिपर्व' उपन्यास में सामाजिक आक्रोश	प्रा.जे.ए.कांबले	138
29	हिंदी कविता में उपेक्षित दलित समाज	प्रा.डॉ.वर्षारानी समशेर सहदेव	142
30	हिंदी काव्य में उपेक्षित नारी	प्रा.डॉ.हनमंत सोहनी	148
31	साठोत्तरी हिंदी उपन्यासोंमें उपेक्षित नारी के परिवर्तित जीवन मूल्य	डॉ.उत्तम आलतेकर	153
32	सुशीला टाकभौरे की कविता में उपेक्षित नारी	प्रा.सविता कृष्णात पाटील	158
33	छप्पर' उपन्यास में दलित चेतना	प्रा.सुहास चौगले	163

" हिन्दी कविता में उपेक्षित दलित समाज "

डॉ. वर्षाराणी निवृत्तीराव सहदेव,
श्री विजयसिंह यादव कला व विज्ञान महाविद्यालय,
पेठ–वडगाव, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापूर
फोन : 8806919900

आज की हिन्दी कविता में दलित जीवन की अभिव्यक्ति बडी तीव्रता से हो रही है। हिन्दी कविता गुलामी, जातिवाद और वर्णव्यवस्था के विरूद्ध चेतना है। हिन्दी कविता में दलितों की वेदना, दुःख और दर्द है। यह केवल एक व्यक्ति का नहीं किन्तु हजारों की वेदना है। साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता भी दलित जीवन की पीडा का सच्चा साहित्य है। अब तक उनके तीन काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं – 'सदियों का संताप', 'बस्स! बहुत हो चुका' और 'अब और नहीं...'। इन तीनों संग्रहों में समाज में व्याप्त अंधश्रद्धा जातिवाद, ऊँच–नीच के भेदभाव आदि को अपनी कविता का विषय बनाकर समाज के कठोर सत्य को बेपरदा किया है। स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और न्याय की प्रखर मॉग की है। उन्होंने अपने समाज की संवेदनाओं को बहुत गहराई से व्यक्त किया है। उनकी कविता में जो नकार की आग है वह अनुभव की चिंगारी है।

भारतीय समाज में ब्राह्मणवादी संस्कृति को महत्व दिया गया, लेकिन धर्म और परंपरा के नाम समाज का शोषण हुआ। कवि हिंदुओं की पारंपरिक अस्थि–विसर्जन की मान्यताओं को नकारते है। ब्राह्मण अस्थि–विसर्जन के नामपर दक्षिणा के रूप में रूपयों को लेते हैं। कवि इस ब्राह्मणवादी वर्ण–व्यवस्था के विरूद्ध जाकर कहते हैं–

"इसलिए तय कर लिया है मैंने
नहीं नहाऊंगा ऐसी किसी गंगा में
जहॉ पंडे की गिद्ध नजरे गडी हों
अस्थियों के बीच रखे सिक्कों
और दक्षिणा के रूपयों पर
विसर्जन से पहले ही झपट्टा
मारने के लिए बाज की तरह..." [1]

सदियों से सवर्ण समाज के लोगो द्वारा दलितों का शोषण किया गया। इसमें सत्य है कि सवर्ण समाज ने दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार किया। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा। उनका मजदूरी करके पेट भरना कायम हो गया। उनके पास न घर है न

इसप्रकार हिन्दी कविता गुलामी, जातिवाद और वर्णव्यवस्था के विरूद्ध चेतना है। कवि का हृदय झकझोर उठता है और कविता रूपी शंखनाद से अपनी रचना प्रेषित करता है। उसे नई दिशा देने का बृहत कार्य भी जरूर करता है। हिन्दी कविता में दलितों की वेदना, दुःख और दर्द है। यह केवल एक व्यक्ति का नहीं किन्तु हजारों की वेदना है। वे भारतीय समाज को आत्म परीक्षण करने के लिए कहते हैं।

हिन्दी कविता समतामूलक समाज की स्थापना का आहवान करती है। हिन्दी कविता दलितों के जीवन को एक नयी दिशा देती है। स्पष्ट है कि हिन्दी कविता दलितों के भोगे हुए जीवन का यथार्थ है। इसलिए हिन्दी कविता दलित की पीडा संघर्ष, अस्मिता को उजागर करती है। हिन्दी कविता ने दलित चेतना को गहरे रूप में उभारने की कोशिश की है। और इसमें उनकी आवाज बुलंद रहीं। हिन्दी कविता के माध्यम से दलितों को अपने अधिकारों एवं न्याय के प्रति सचेत करते हैं। हिन्दी कविता में दलितों के शोषण को मिटाने के संघर्ष एवं नये परिवर्तन की सोच है। हिन्दी कविता ने समाज में स्थित वर्ण–व्यवस्था, वर्ग–भेद, जातीयता, ऊँच–नीच का विरोध करके दलितों के जीवन के लिए एक नयी चेतना जगाने की कोशिश की है।

संदर्भ सूची :

1 – अस्थि विसर्जन – मधुमती : अप्रैल–मई, 2010 पृ. 88
2 – उन्हें डर है – मधुमती : अप्रैल–मई, 2010 पृ. 89
3 – ओमप्रकाश वाल्मीकि – अब और नहीं, पृ. 92, 93
4 – ओमप्रकाश वाल्मीकि – आईना, पृ. 13
5 – उन्हें डर है – मधुमती : अप्रैल–मई, 2010
6 – ओमप्रकाश वाल्मीकि – अब और नहीं, (अच्छा ही हुआ) पृ. 103
7 – http://dalitkavitakosh.com (सदियों के संताप से)
8 – ओमप्रकाश वाल्मीकि – अब और नहीं – पृ. 106

Shri. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur

Est.: 1962
NAAC 'A' Grade

Shivaji University, Kolhapur

Dr. Babasaheb Ambedkar Centre For Research And Development

Certificate

This is to Certify Mr./Mrs.Dr./Prof ....Nisargandh Prabhakar R.................. has actively participated in National Seminar on **"Nation Builder Dr. B.R. Ambedkar : His Contribution in Making Modern India"** Organized By Dr. Babasaheb Ambedkar Centre For Research and Development , Shivaji University, Kolhapur on 9th and 10th February, 2018. He /She presented paper on the topic ....their Sickness is Causing Danger to the.......... in this National Seminar. Health and Happiness of other Indians: Dr. Ambedkar warn to the Indians.

Prof. Dr. Shirikrishna S. Mahajan
Director
Dr. Babasaheb Ambedkar Centre for Research and Development
Shivaji University, Kolhapur-416004

....their Sickness is Causing Danger to the Health and Happiness of Other Indians: Dr. Ambedkar Warn to the Indians

Dr. Nisargandh Prabhakar R.

Department of Sociology

Shri. Vijaysinha Yadav Arts and Science College, Pethvadgaon, Dist. Kolhapur

pnisargandh@gmail.com

Introduction:

Dr. B. R. Ambedkar is a principal architect of modern India. He founded the philosophy of liberty, equality, fraternity and justice through the casteless society. The philosopher founded their values and ethics to protect rights of human being. The exploited Indian discovered their icon within the personality of Dr. Ambedkar. Electronics channels (CNN-IBN, History18 and BBC) searched greatest Indian after Gandhi in August2012.Dr.B.R.Ambedkar selected greatest Indian after Gandhi through popular votes, market research and expert team. It shows the relevance of Dr. Ambedkar in the present global age within the common Indians. Mr. N.Ram Vetern journalist identified the reason of selection. He expressed, "Ambedkar a terrific radical scholar, whole essay Annihilation of caste remain a shining model for many of us.''(OUTLOOK-AUGUST-2012-35)

Methodology:

The main object of the study is to understand the thesis of Dr. Ambedkar on the annihilation of caste system in India. The present article is analytical in nature. In this paper, documentary primary and secondary data have been used. The study depends upon the theoretical approaches developed by Jotiba Phule, and Dr. Ambedkar in understanding the caste realities in India.

Warn to Indian Society:

Periyar warned about Brahmin domination in 1920.He stated 'if the Brahmin domination was not abolished before the Britisher quit India, then would not be democracy but '*Brahmanocracy*' after independence".(Veeramani 2008-59).Dr. Ambedkar is great philosopher about Hinduism, so he has also warned to Hindus in preface of second edition of 'Annihilation of Caste'. He said "I shall be satisfied if I make the Hindus realize that they are the sick man and that their sickness is causing danger to health and happiness of Indian." (Ambedkar-1936 rep.2013 -1).In this book Ambedkar warned about nationality and morality.

He explained "There is no doubt; in my opinion you. that unless order you can achieve litt by way of progress. You cannot mobilize the community either for defense or for offence. You cannot build anything on the foundations of caste. You cannot build up a nation; you cannot build up a morality."

Dr. Ambedkar raised the question on the morality and nationality with relation of caste. He expressed, Caste has killed public sprit. Caste has destroyed the sense of public charity. Caste has made public opinion impossible. A Hindu's public is his caste. His responsibility is only to his castes virtue has become caste – ridden and morality has become caste bounded.....my caste -man, right or wrong; my caste- man, good or bad. It is not a case of standing by virtue and not standing by vice. It is a case of standing or not standing by caste. Have not Hindu's committed treason against their country in the interest of their caste. (Ibid: 43)

The question of *Swaraj* (Independence) always created by the higher castes Hindus. Dr. Ambedkar X-ray the concept of *Swaraj* and raised some questions.

Health and Happiness through the annihilation of caste system:

Dr. Ambedkar fought for the social equality and social justices in modern India. He first understand the caste system thereafter he has given ways for eradication of caste. He gives thought about ideal society in the book 'Annihilation of Caste'. He expressed "What is your ideal society if you do not want caste is a question that is bound to be asked of you. If you ask me, my ideal would be a society based on Liberty, Equality and Fraternity". (Ibid:43).For the making of equal society he gives some ways i.e. 1) abolish sub-castes. 2) Inter castes dining. 3) Inter castes marriage. 4) Destroy the belief on *Shastras* (Hindu) .All ways given for the eradication of caste but all are not equally important. He stated in the letter sent to Mr.Har Bhagwan on 27 April 1936 "The real method of breaking up the caste system was not to be bring about inter-caste dinners and inter-caste marriages but to destroy the religious notions on which caste was founded" (Ibid-II)

Abolished Priesthood:

Notional change is very much important to make the equal society, but Brahman priest is basic obstacle so Ambedkar thought that it should abolish. He expressed "It should be better if priesthood among Hindus was abolished. But as this seems to be impossible, the priesthood must at least cease to be hereditary. Every person who professes to be a Hindu

Shri Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ★ ESTD. 1999

must be eligible for being a priest. It should be provided by law that no Hindu shall be entitled to be a priest unless he has passed an examination prescribed by the State and holds a sands from the State permitting him to practice."(Ibid: 70/71) Dr. Ambedkar gave some more radical ways to abolish Priesthood in the interest of annihilation of castes.

Conversion of Religion:

Dr. Ambedkar deeply thought about notional change therefore he awaked to society about new principles of religion. He has given new values for the annihilate caste. He thought conversion of religion means new life. He stated that "complete change in the fundamental notions of life-it means a complete change in the values of life. It means a complete change in outlook and in attitude towards men and things. It means conversion but if you do not like the word, I will say, it means new life."(Ibid 72).After the declaration in yavala conference about conversion, he has been searched new values up to 14 October 1956 for to make equal society. He accepted Buddha Dhamma which is based on Equality, Liberty, Fraternity and justices. Humanity, morality, Scientific attitude, is main base of Buddha Dhamma therefore Ambedkar accept the Buddhism.

Nationalization:

Caste system gives special authority to higher caste in all terms i.e. social, economic, political etc. Without denied the special authority not possible to make equal society. Dr.Ambedkar has emphasized on socialism as tools of to make equal society. He has given first speech in Constitution Assembly on 16 December 1946. He expressed "there may be social and economic justices in the country, that there would be nationalization of industry and nationalization of land .I do not understand how it could be possible for any future Government which believes in doing justice socially, economically and politically, unless its economy is a socialistic economy."(BAWS-vol.13-9)

Participation of Brahman:

In the present age we are always discuss and debate on participation of Brahman in the process of eradication of caste. Dr. Ambedkar raised question on this issue, he said that "the breakup of the Caste system is bound to affect adversely the Brahmin Caste. Having regard to this, is it reasonable to expect that the Brahmins will ever consent to lead a movement the ultimate result of which is to destroy the power and prestige of the Brahmin Caste?" Ambedkar has justified "In my judgment, it is useless to make a distinction between

Shri Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ESTD. 1959

the secular Brahmins and priestly Brahmins? Both are kith and kin. They are two arms of the same body and one bound to fight the existence of the other." (Ibid :60)

Role of intellectual class:

Intellectual class is the cream of any society. They have done their job in the difficulties of society. Brahmans are the cream of Indian society but they are not doing their job properly, especially in the process of annihilation of caste. Dr. Ambedkar pointed out this things and he has warned to Indian society. He stated that "When such an intellectual class, which holds the rest of the community in its grip, is opposed to the reform of Caste, the chances of success in a movement for the break-up of the Caste system appear to me very, very remote".. (ibid-62) in other words we says, who are the sufferers of society or victim of caste system they take responsibility on their shoulder for the eradication of caste. They should try to make the intellectual class for annihilate the caste system.

Aim is important than ways:

Dr. Ambedkar has given ways and methods for eradication of caste system but he did not stickup for them. He emphasized on aim of annihilation of caste not on the ways. He heartily expressed "you must make your efforts to uproot caste, if not in my way, then in your way."(ibid -75)

Conclusion:

There is long history of eradication of caste system. In modern period, Dr.Ambedkar had done very eminent contribution for the eradication of caste system after Jotiba Phule. His perspective developed by not only study but also his experience. He expressed his views through Human Right perspective and act for Human development. So his perspective on Eradication of Caste it's become a pioneer thought of equality. Therefore we must say Dr.Ambedkar is the principal architect of social equality and justices in modern age.

References:-

Ambedkar B. R. – 1916 (rep. 2009), "Castes in India: Their mechanism, genesis and Development" Siddhartha Books, Delhi

Ambedkar B. R. –	1936 (rep. 2013)	Annihilation of Caste with Reply to Mahatma Gandhi, Dr..Babasaheb Ambedkar Source Material Publication Committee, Higher Education Department, Government of Maharashtra.
Narke Hari -	(2008)	Dr. Babasaheb Ambedkars writings and Speeches, Vol. no.7, Mumbai
Narke Hari -	(2008)	Dr.Babasaheb Ambedkars writings and speeches Vol. no.13 Mumbai
Teltumbde Anand	(2011)	Some Fundamental Issues in Anti-Caste Struggle Speeches delivered at the biannual conference of the Kula Nirmulan Porata Samiti in Guntur, Andhra Pradesh
OUT LOOK	(20th August 2012)	The Weekly News magazine, New-Delhi.

Special Issue February 2018

MAH/MUL/03051/201

ISSN-2319 931

International Multilingual Research Journal

Impact of GST

Editor

Prof.Virag S.Gawande

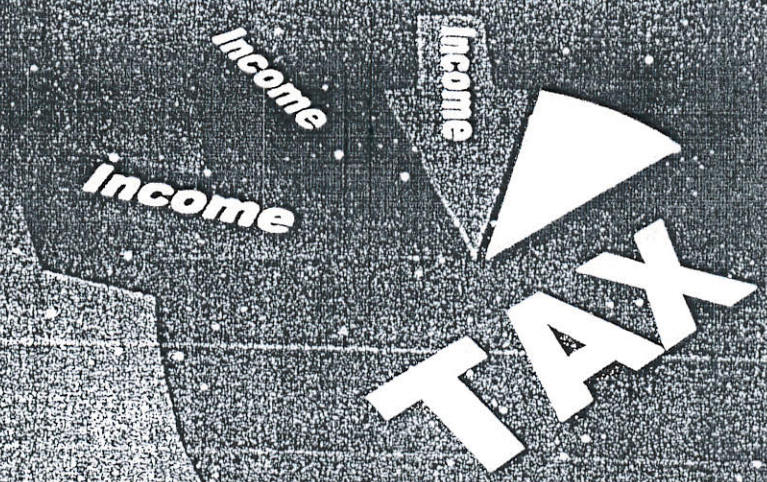

Dr.Sanjay j. Kothari

Dr. Dinesh W.Nichit

Published By

Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage Walgaon, Dist . Amravati

&

Aadhar Social Research Development Training Institute, Amravati.

Shri Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ESTD. 1999

|| Index ||

01) IMPACT OF GST ON INDIAN ECONOMY
Shri. Karande Ramesh Hanmant, Pethvadgaon, Dist: Kolhapur. || 08

02) Impact of GST on Economic Growth of India
Prof. Madhuri R. Umekar, Warud || 11

03) GST Goods and Services
Dr. M.B.Rathod,Panharkawada || 14

04) GOODS AND SERVICE TAX [GST]
Prof. Anand Gomaji Chavan, Akola. || 17

05) GOODS AND SERVICE TAX (G.S.T.)-IT'S IMPACT ON INDIAN ECONOMY: A GLANCE
Prashant M. Puranik, Chandrapur || 22

06) THE IMPACT OF GST (GOODS AND SERVICES TAX) IN INDIA
Mangalavati G. Pandey, Amravati || 25

07) IMPACT OF GST
Ku. Jayaprabha M. Bhagat, Wanoja || 29

08) Impact of GST on Indian Economy
Harshad Arvind Ekbote, Patur, Dist. Akola. || 31

09) India's Economic Performance of Agriculture
Dr. P. N. Ladhe, Malkapur. || 34

10) IMPACT OF GOODS AND SERVICE TAX
Dr. Jayant Prabhakar Bobde, Akola. || 39

11) IMPACT OF GST
DR. RAJKUMAR R. RATHOD, Barshitakli, Dist-Akola || 42

12) Goods and Service Tax -- Challenge and Opportunities
Dr. Aruna S. Wadekar, Amravati. || 50

13) IMPACT OF GOODS AND SERVICE TAX (GST) ON END CONSUMERS ......
PrabhakarMotghare, Dr. Gopal Zade, Mouda || 53

01

IMPACT OF GST ON INDIAN ECONOMY

Shri. Karande Ramesh Hanmant
Assistant Professor,
Shri Vijaysinh Yadav Arts and Science College,
Pethvadgaon, Dist: Kolhapur.

Abstract:-

Goods and Services Tax popularly known as GST a single tax on the supply of goods and services, right from the manufacturer to the consumer. Credits of input taxes paid at each stage will be available in the subsequent stage of value addition, which makes GST essentially a tax only on value addition at each stage. This research paper highlights the positive and negative impact of the GST in the Indian Tax System.

Keywords:- GST in India, Tax system in India, Mechanism of GST, Positive and Negative Impact of GST.

Introduction:-

Goods & Services Tax is a comprehensive, multistage, destination-based tax that will be levied on every value addition. Goods and Service Tax (GST) implemented in India to bring in the 'one nation one tax' system, but its effect on various industries will be slightly different. The first level of differentiation will come in depending on whether the industry deals with manufacturing, distributing and retailing or is providing a service.

Objective of Study:-

The study has following objectives:

- To cognize the concept of GST
- To study the features of GST
- To evaluate the advantages and challenges of GST

Research Methodology:-

The study focuses on extensive study of Secondary data collected from various books, National & international Journals, government reports, publications from various websites which focused on various aspects of Goods and Service tax.

Concept of Goods and Service Tax:-

GST is a comprehensive indirect tax on manufacture, sale and consumption of goods and services at national level. One of the biggest taxation reforms in India the (GST) is all set to integrate State economies and boost overall growth. Currently, companies and businesses pay lot of indirect taxes such as VAT, service tax, sales tax, entertainment tax, octroi and luxury tax. Once GST is implemented, all these taxes would cease to exist. There would be only one tax, that too at the national level, monitored by the central government. GST is also different in the way it is levied at the final point of consumption and not at the manufacturing stage. At present, separate tax rates are applied to goods and services. Under GST, there would be only one tax rate for both goods and services. The goods and services Tax will indeed be a further significant improvement towards a comprehensive indirect tax reforms in the country. Integration of goods and services taxation would give India a world class tax system and improve tax collections. It would end distortions of differential treatments of manufacturing and service sector. GST is expected to create a business friendly environment, as price levels and hence inflation rates would come down overtime as a uniform tax rate is applied. It will also improve government's fiscal health as the tax collection system would become more transparent, making tax evasion difficult. The GST is expected to replace all the indirect taxes in India. At the centre's level, GST will replace central excise duty, service tax and customs duties. At the state level, the GST will replace State VAT.

Shri Vidyasinha Yadav College Peth Vadgaon ESTD. 1999

Existing Indirect Tax Structure in India:-

A. Central Taxes	B. State Taxes
[illegible] duty	State VAT / Sales Tax
[illegible] duties of excise	Central Sales Tax
[illegible] levied under Medicinal & [illegible] Preparation Act	Purchase Tax
[illegible] duties of customs (CVD) & [illegible]	Entertainment Tax (other than those levied by local bodies)
[illegible] Surcharges & Cesses	Luxury Tax
	Entry Tax (All forms)
	Taxes on lottery, betting & gambling
	Surcharges & Cesses

Goods and Services Tax Network:-

Goods and Services Tax Network (GSTN) has been set up by the Government as a private company under erstwhile Section 25 of the Companies Act, 1956. GSTN would provide three front end services, namely registration, payment and return to taxpayers. Besides providing these services to the taxpayers, GSTN would be developing back-end IT modules for 25 States who have opted for the same. The migration of existing taxpayers has already started from November, 2016. The Revenue departments of both Centre and States are pursuing the presently registered taxpayers to complete the necessary formalities on the IT system operated by Goods and Services Tax Network (GSTN) for successful migration. About 60 percent of existing registrants have already migrated to the GST systems. GSTN has already appointed M/s Infosys as Managed Service Provider (MSP) at a total project cost of around Rs 1380 crores for a period of five years.

Example of GST Calculation:-

Let us assume that the GST is set at 5% Suppose that the manufacturing cost of a Product A is 100 and assuming a GST of 5% the total amount is Rs. 105 The next step of taxation would be when the Product is sold to consumers, let's say at a price of 150. So the GST will charge another 5% on just the difference of Rs. 150 and Rs. 105 i.e. only 5% on Rs. 45 which is equal to Rs. 2.25. So the final price is Rs. 150 + Rs. 2.25. Unlike the case of petrol pricing there is no tax on tax now. This eliminates the cascading effect of taxes which is very prevalent in our economy and has been simplified to an elemental level in the example. Since the GST will be applied at every step of value creation it will be very difficult for black money owners to participate anywhere in the value chain with the GST without accounting for all other transactions.

Positive Impact of GST:-

All most every industry body are "fully prepared" for implementation of the new indirect tax regime, while commending the government's efforts towards its rollout. The nationwide GST will overhaul India's convoluted indirect taxation system and unify the over $2 trillion economy with 1.3 billion people into a single market. The medium-term impact of GST on macroeconomic indicators is expected to be extremely positive. Inflation will be reduced as cascading of taxes will be eliminated. Assocham president Sandeep Jajodia said India would move many notches up the global ease of doing ladder by this single, but the most important tax reform in the country.

Benefits of GST:

1. Simple Life:

GST is expected to replace multiple indirect taxes, thereby contributing to decrease in compliance cost. All assesses will find comfortable under GST as the compliance cost will be reduced.

2. Boost in revenue:

The practice of tax evasion shall come down, which means that that input tax credit shall motivate the suppliers to pay the taxes honestly. This will eventually reduce the number of goods which are exempted from tax 6. Revenue Neutral Rate can be the principle of GST introduction in India.

3. A common Market:

GST is single move unifying all indirect taxes for the whole nation that will make India one unified common market. GST is always preferred in a unified form which means that one single GST for the whole nation which can

be instead of the dual GST format. However, India is adopting dual GST looking into the federal structure; it is still a good move towards a unified GST indirect taxation system.

4. Decrease in Logistic Costs:

The GST model will help companies to reduce logistics cost by 1.5 to 2.5% as they reconfigure their supply chains and bring key structural changes to the logistic industry. It will fast track the distribution of goods and services and improve operational efficiencies.

5. Investment boost:

GST will create level playing field between the organised and unorganised sectors. Free trade and open markets will lead to more investments which in turn will boost the economy. It will also attract more foreign direct investments across sectors due to tax transparency and ease of doing business.

6. Rise in GDP:

According to IMF, the adoption of GST could help GDP growth to over 8% and create a single nation market for enhancing the efficiency of the Intra-Indian movement of goods and services8. As the GST will subsume of other indirect taxes, the exemption available for manufacturers in regards excise duty will be taken off which will be an addition to government revenue that could result in an increase in GDP. The increased income of the government will be redirected towards the development projects.

7. Reduction in prices:

Due to lower burden of taxes on the manufacturing sector, the manufacturing costs will be reduced, hence prices of consumer goods likely to come down. Also, due to reduced costs some products like cars, etc. will become cheaper. The low prices will further lead to an increase in the demand/consumption of goods.

Negative Impact of GST:-

India has adopted dual GST instead of national GST. It has made the entire structure of GST fairly complicated in India. The centre will have to coordinate with 29 states and 7 union territories to implement such tax regime. Such regime is likely to create economic as well as political issues. The states are likely to lose the say in determining rates once GST is implemented. The sharing of revenues between the states and the centre is still a matter of contention with no consensus arrived regarding revenue neutral rate. Pre GST service tax of 15%, which would increase to 18-20% in post GST. Hence, although prices of goods and products can come down, service industry will bear the brunt of higher taxes. Air travel, hotels would become more expensive. Currently, economy class tickets are taxed 6% and non-economy class tickets are charged 9%. Once GST is implemented, it would increase to 18%, thereby leading to direct increase of 9-12% tax on the tickets. Unless the airlines absorb this increase, the additional tax has to be paid by the consumer.

1. Proposed GST Rate Is Higher Than VAT:

The rate of GST is proposed to be higher than the current VAT rate in India, which although reducing the price in the longer run, will be of no help in cutting down prices of commodities.

2. Dual Control:

A business will be indirectly controlled by both the Centre and the State in all tax related matters. The State will lose autonomy to change the tax rate which will be regulated by the GST Council.

3. Loss Incurred By the Manufacturing States: Since GST is mostly related to the manufacturing segment, most manufacturing states may incur losses. But the government has proposed to compensate for those losses for a period of 5 years.

Conclusion:-

There are approx. 140 countries where GST has already been implemented. Some of the popular countries being Australia, Canada, Germany, Japan, and Pakistan, to name a few. Implementation of GST impacts a nation both ways, positively and negatively. Ignoring negative aspects, positive aspects can be taken into consideration, in order to improve the

Shri. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ESTD. 1990

economy of the country. In order to measure the impact the GST we need to wait for the time and the Government needs to communicate more and more about the systems. It could be a good way to reduce the black money and good effort by the Government of India after the Demonetization of the money in 2016.

References:

1. Dani S (2016) A Research Paper on an Impact of Goods and Service Tax (GST) on Indian Economy. Bus Eco J 7: 264. doi: 10.4172/2151-6219.1000264

2.Empowered Committee of Finance Ministers (2009). First Discussion Paper on Goods and Services Tax in India, the Empowered Committee of State Finance Ministers, New Delhi.

3. Jaspreet Kaur, (2016) "Goods and service tax (GST) and its impact"International Journal of Applied Research 2(8): pp. 385-387

4. A Dash , (2017) " Positive And Negative Impact Of Gst On Indian Economy" , International Journal of Management and Applied Science (IJMAS) , pp. 158-160, Volume-3,Issue-5

5. The Economic Times (2009) Featured Articles from The Economic Times

6. http://economictimes.indiatimes.com

7. www.gstindia.com

8. www.goodsandservicetax.com

❑❑❑

TRUE COPY

Principal
Shri. Vijaysinha Yadav Arts & Science College
Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur.

02

Impact of GST on Economic Growth of India

Prof. Madhuri R. Umekar
Deptt. Of Commerce
Mahatma Fule Arts, Commerce & Sitaramji Chaudhary Science College, Warud

Abstract: -

The new GST (Good and Service Tax) has been established as the unified indirect tax on goods and services, lunched on midnight July 1, 2017. The GST being levied in India is in five categorized , at the rate of 0%, 5%,12%,18% and 28% per annum. The GST shall be shared equally by center and state. If would significantly bring down product prices.GST will help in growth of economy and proves to be more beneficial than the previous tax system. According to experts, to implementing the GST, it will promote more export, create more employment opportunities and boost growth. It would be the key revaluation in Indian economy it could increase the GDP by 1% to 2%, GST is now accepted all over the world and countries are using it for sales tax system. GST will helps to reduce the prices,more production,growth of companies, good for export oriented business, opportunities for all the poor states to develop. GST play a dynamic role in the growth and development of country.

Keywords: - GST , indirect tax , Central, State , GDP, Economic growth.

The new GST (Goods and Service Tax) has been established as the unified indirect tax on goods and services. The GST was launched on midnight 1 July, 2017 at a special event in the presence of President Pranab Mukharji and Prime Minister Narendra Modi. From 1 July, 2017 the GST being levied in India is in five categories

17-18

ISBN No: 978-81-907287-8-5

Shri Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ESTD. 1999

शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर संलग्नीत
गांधी एज्यूकेशन सोसायटी, कुंडलचे

ता. पलूस, जि. सांगली
अर्थशास्त्र विभाग आयोजित

शिवार्थ
स्मरणिका
२०१८

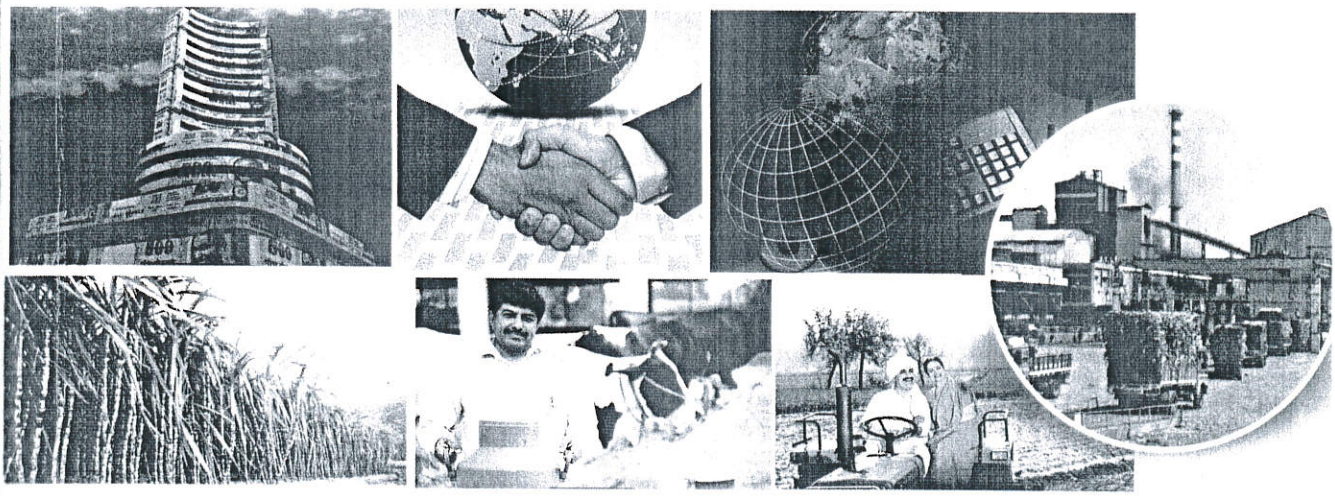

१) सहकारी अर्थकारण- काल, आज आणि उद्या

२) पद्मभूषण डॉ. वसंतदादा पाटील यांचे महाराष्ट्राच्या विकासातील योगदान

शिवाजी युनिव्हर्सिटी
इकॉनॉमिक्स असोसिएशन, कोल्हापूर (सुयेक)

२८ वे वार्षिक अधिवेशन

शुक्रवार दि. ०५ जानेवारी व ०६ जानेवारी २०१८

Shri. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur
ESTD. 1999

अनुक्रमणिका

- सहकार- जागतिकीकरणातील दीपस्तंभ
  - डॉ. विजय ककडे (०१)
- भारतातील सहकारी चळवळीसमोरील निश्चलनीकरणाची आव्हाने
  - डॉ. अनिल वावरे आणि प्रा. किशोर सुतार (०४)
- महाराष्ट्राच्या ग्रामीण आर्थिक विकासात सहकार चळवळीचे योगदान
  - डॉ. सौ. एम्. बी. माळगे (१६)
- Role of Primary Agricultural Co-operative Society (PACS) in Agricultural Development
  - Dr. Ashok Jadhav (23)
- माणदेशातील सहकारी चळवळीतील अग्रगण्य बँक 'दी बाबासाहेब देशमुख सहकारी बँक लि., आटपडी
  - डॉ. सौ. तेजस्विनी मुढेकर आणि प्रा. हणमंत सावंत (२८)
- सहकार पुनरुज्जीवन: काळाची गरज
  - डॉ. सौ. सुनिता राठोड (३५)
- Role of Dairy Co-operative in Indian Economy
  - Dr. M. S. Deshmukh & Prof. Tanaji Ghagare (42)
- Difficulties Before Co-operative
  - Dr. Sujata Patil (51)
- Ethanol Production in Sugar Co-operative
  - Prof. Sanjay Omase (56)
- Urban Co-operative Banks: Issues & Prospects
  - Dr. Pravin Babar (62)
- A Study of Water Management Lift Irrigation Schemes in Sangli Dist. A Comparative Study of Palus & Tasgoan Taluka
  - Prajakta Lad & Dr. Pratap Lad (70)
- Problems of Co-operative Sugar Industry in Maharashtra
  - Dr. Tukaram Rabade (81)
- ग्रामीण विकासातील सहकारी पतपुरवठ्याचे महत्त्व
  - डॉ. टी. एम्. भोसले (८७)

Shri. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon Dist. Kolhapur ESTD. 1999

Role of Primary Agricultural Co-operative Society (PACS) in Agricultural Development

Dr. Ashok Vilas Jadhav
Assistant Professor & Head
Department of Economics
Shri Vijaysinha Yadav Arts &
Science College PethVadgaonDist – Kolhapur

Abstract

PACS are the banks which are situated in rural area and plays a very importantrole in rural credit system by performing their activities on co-operative principles andalso these banks are worked under the District Credit Co-operative Banks. They provideshort term and medium term loan to rural people to meet their financial requirements. But,the rural people still depend on unorganized sources such as money lenders invillage, mandies, traders etc. So, various measures taken by Government to reducethese unorganized sources through the establishment of PACS in rural areas. In orderknow the role of PACS in agricultural development in India the study has been undertaken.

Introduction

The co-operative banks in India play an important role in even today in rural financing. These are registered under the Co-operative Societies Act and also regulated by the RBI. They are governed by the "Banking regulation Act-1949" and Banking Laws (Co-operative societies) Act 1965. The business of co-operative banks in urban area also have increased in recent years due to sharp increase in the number of primary co-operative banks. The co-operative movement was stated in India largely with a view to providing agriculturists funds for agricultural operations, at

low rates of interest and protect them from the controls of money lenders.

Objectives of the Study

- To study the role and performance of PACS in respect of agricultural credit and rural development.
- To find out reasons for poor recovery of loans in PACS
- To offer suggestions to improve the performance of PACS

Methodology

The study is based on Secondary data. The data has been collected from books, magazines and websites.

Role of PACS

A co-operative credit society, commonly known as Primary Agricultural Co-operative Society (PACS) may be stated with 10 or more persons, normally belonging to a village. The value of eachshare is generally nominal so as to enable evenpoorest farmer to become a member. PACS occupya predominant position in the co-operative structureand form its base. A Primary Agricultural CreditSociety is organized at grass-root level of a villageor a group of small villages. It is the basic unitwhich deals with rural (agricultural) borrowers, givesthose loans and collects repayments of loansgiven. It serves as the final link between theultimate borrowers on the one hand and higherfinancial agencies, namely the RBI/ NABARD on theother hand.

At the end of June 2013 there were 87000PACS. These societies covered about 90% of 5.8 lakhvillages. Their membership of 9 crores coveredabout 65% of the total estimated population ofabout 14 crore of rural households. More than halfof members of PACS are persons of smallmeans- small farmers, agricultural labourers, ruralartisans, and 25% of them belongs to SC/ST.The working capital of the PACS derivedmainly from borrowings from Central Co-operativeBanks (CCBs) and the small proportion fromowned funds and deposits. That the PACS havefailed to attract deposits is not so much areflection of low savings habits of the ruralpopulation as a reflection of the availability ofbetter assets to rural savers of both rate of returnand riskiness.

High net borrowings from CCBs shows thatPACS act mainly as distribution channel for fundsmobilized elsewhere. Only the members of a PACSare entitled to borrow from it. Most loans are foragricultural purpose and are such purpose ofmachinery (mostly pump sets for irrigation) andcattle are also given. But, consumption loans givenmostly to landless labourers, artisans, and marginalfarmers. The share of loans given going to weakersections is usually about 40% of loans. A varyingnumber of PACS also undertake non-creditactivities such as handling the supply of farmrequisites, distribution of consumer goods, amongtheir members, constructing godowns andmarketing of agricultural produce and process ofit.

The management of the society is under an elected body consisting of President, Secretary and Treasurer. The management is honorary, the only paid membership being normally, the accountant. Loans are given for short period normally for one year, for carrying out agricultural operations, and the rate of interest is low. Profits are not distributed as dividends to shareholders but are used for the

construction of the well or maintenance of the village school and so on.

The PACS have stepped up their advances to the weaker sections particularly the small and marginal farmers. This progress has been quite spectacular but not accurate considering the demand for finance from farmers. However, the primary credit society has continues to remain the weakest link in the entire co-operative structure.

Objectives of PACS

1. For the membership of co-operatives credit society members should belong to located at village of co-operative societies.
2. The work of PACS should limited to its village only.
3. The liability of PACS should be unlimited.
4. PACS is liable for to the deposits and loans on itsaccount.
5. PACS provides loans to its members only.
6. Loans repayment schedule can be decided bythe co-operative society as per the significancepurpose of the loans.
7. PACS provide the loan only for medium andshort term purpose.

Functions of PACS

1. It promotes economic interest of member's in accordance with the co-operative principle.
2. It provides short term and medium term loans.
3. It promotes savings habits among members.
4. It supplies agricultural inputs like fertilizers, seeds, insecticides, and implements.
5. It provides marketing facilities for the sale of agricultural products and
6. It supplies domestic products requirements such as sugar, kerosene etc.

Management, Membership and Share Capital of PACS

The general body elects a managing committee which consists of 5 to 9 members and elects a president, secretary, and treasurer to look after the day today functioning of the society. All the office bearers render honorary service. The RBI has given a directive to appoint a full time paid secretary to maintain the accounts for each society.

All agriculturists, agricultural labourers, artisans and small traders in the village can become member of the society. PACS issue ordinary shares of small value depending upon the particular society .i.e. Rs.10 and Rs .50 each to their members. The ownership of shares decides the right and obligations of the holder to the society. Share capital forms an important form an part of the working capital. Members borrowing capacities were determined by the number of shares held by them. Initially, societies were form with unlimited liability. The All India Rural Credit Review Committee pointed out that unlimited liability operates as a restraints on the willingness of the society to liberalize its loan policies, to admit new members and to extend its area of operation. Besides, it hinders the society to receive contribution from the State government, whose liability inevitably has to be limited. In view of these reasons, the societies were formed with limited liability and existing societies were converted into limited liability societies.

To make all Primary Agricultural Society viable and ensure adequate and timely flow of

Co-operative credit to the rural areas the RBI, in collaboration with State Government's had been taking a series of steps to strengthen the PACS and to correct regional imbalances in cooperative development. These efforts are being intensified by providing larger funds to weak Societies to write off their losses, bad debts and overdue.

Reasons for Poor Recovery of Loans in PACS

Internal reasons

1. Slackness in internal control system
2. Poor management informationsystem
3. Low motivation and involvement ofstaff
4. Poor industrial relations climate
5. Improper identification of borrower under or over financing
6. Lack of post disbursement follow up
7. Lack of appraisal skills
8. Failure to ensure adequate, rapportwith govt agencies
9. Perception of bank as a charityinstitution
10. Delay in loan sanctioning
11. Insufficient gestation or repaymentperiod
12. Lack of borrower contact and poorunderstanding of rural businessno thrust on recovery
13. Personal accident, death etc.
14. Mutualisation of loan
15. Diversion of funds
16. Shifting of place of residence orbusiness
17. Lack of technical and managementskills
18. Poor maintenance of assets

External reasons

1. Change in policy environment
2. Inadequate market linkages
3. Change in economic conditions
4. Change in technology
5. Political interference
6. Target approach under government Sponsored programmes
7. Legal process
8. Geographical factors
9. Loan waiver, write off etc.

Exclusive reasons

1. Lack of transparency
2. Lack of professional management
3. Inadequacy of non-official and

Shri. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ESTD. 1999

Member education

Imbalance among tiers

Findings

1. Rural credit is mainly focused on the agro sector and PACS plays a major role in rural finance.
2. The society provides only short-term and medium-term loan.
3. It supplies short-term credit on the personalsecurity of the borrowers, while medium term credit is given by charge on their immovableassets.
4. The society provides loans only relate to agriculturalcredit to farmers
5. Deposit mobilization in society is less. Because oflack of awareness among the people about the different schemes of the society.
6. The members deposit money for the purpose ofcompulsion made by banker to open account.
7. The amount of loan distributed to memberswere in inadequate time.

Conclusion

Primary Agricultural Credit Society is actually organized at the grass-roots level a village or a group of small villages. It is the basic unit which deals with rural credit to farmers for meeting their financial requirements. It provides short-term and medium-term loan to farmers which helps to meet their short-term financial requirements. It supplies agricultural inputs and provides marketing facility for the agricultural products. For the development of agricultural sector and allied activities adequate and timely finance are essential. But many financial problems are cropping up in the process of development of co-operative system they are lack of adequate and trained staff, lack of necessary funds, poor industrial relations climate, lack of professional management, political interference, change in economic conditions, over dues and limited source of income of the farmers and so on these societies are unable to provide adequate finance to the members and they are making delay in the sanctioning of loan. Therefore to increase the efficiency of the society and to serve the rural agricultural people in a better perspective the cooperative banking should be strong and efficient to face the challenges in competitive

Reference

A.R. Vishwanath(2008), "Institutional finance andagricultural credit co-operatives in Karnataka"Cooperative Perspective, Vol,42, no.4.

Bagchi(2006),Agriculture and Rural developmentare synonymous in reality, Journal of Instituteof C.A.of India, Volume-54,New Delhi.

Misra and Puri, Indian Economy, HimalayaPublishing House,28th revised edition and updatededition 2010.

RudraDatt, K. P. M. Sundaram, Indian Economy, S.Chand and company Ltd Ram Nagar, New Delhi.